वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान में मनाये गये हिन्दी कार्यशाला का रिपोर्ट

वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान, कोयम्बत्तूर में राजभाषा के कार्यान्वयन में प्रगति पाने के लिये प्रतिवर्ष अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। इसी क्रम में 24 जून 2019 को इस संस्थान में हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में दो विषयों पर चर्चा की गई। पहला "हिन्दी में टिप्पण लेखन" और दूसरा "हिन्दी पत्राचार"। इन विषयों पर चर्चा करने के लिये क्रमश: डॉ.वि.कु.वा.बाचपई, वैज्ञानिक – डी (सेवा निवृत्त) और श्री.जी.कण्णदासन, वरिष्ठ हिन्दी अनुवादक, कर्मचारी भविष्य निधि संगठन, कोयम्बत्तूर को आमंत्रित किया गया था।

सर्वप्रथम इस संस्थान के निदेशक डॉ.मोहित गेरा जी ने कार्यशाला का शुभारंभ करते हुए उस पर अपने विचार व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि हिन्दी हमारी राजभाषा है और सरकारी कर्मचारी होने के नाते सभी को दिन-प्रति-दिन के कार्य में हिन्दी का प्रयोग करना चाहिये। आगे कार्यशाला में उपस्थित सभी कर्मचारियों से प्रतिदिन के कार्य में राजभाषा का प्रयोग करने में होने वाली व्यवहारिक समस्याओं के बारे में चर्चा की गई और समस्याओं के समाधान हेतु सभी कर्मचारियों ने अपने राय दिये। इसके बाद निदेशक जी ने कहा कि तमिलनाडु जैसे अहिन्दी क्षेत्र में रहकर हिन्दी का प्रयोग करना कठिन है लेकिन फिर भी जहाँ तक हो सके राजभाषा का प्रयोग कर अपने कर्तव्य को निभाना चाहिये और सभी पदधारियों से अनुरोध किये कि कनिष्ठ अनुवादक की सहयोग लेकर फायलों एवं पत्राचार में राजभाषा का प्रयोग करें ताकि राजभाषा विभाग द्वारा दिये गये लक्ष्य को प्राप्त कर सकें।

डॉ.वि.कु.वा.बाचपई, वैज्ञानिक – डी (सेवा निवृत्त) ने पहला सत्र का शुभारंभ करते हुये "हिन्दी में टिप्पण लेखन" विषय पर विस्तार से चर्चा किया। अपने भाषण में उन्होंने कहा कि किसी भी पत्र को लेकर फाइल में टिप्पण लिखते समय उस पत्र की विषय-वस्तु, समयबद्ध, मांगे गये सूचना आदि को ध्यान में रखना चाहिये। निष्पक्ष होकर कार्य करना चाहिये। राजभाषा के

नियमानुसार फाइलों में 30% हिन्दी का प्रयोग करना चाहिये। इसके ध्यान में रखते हुए कम से कम टिप्पण के शुरुआत और अंत में हिन्दी का प्रयोग करना चाहिये। यह तभी संभव है जब हर कर्मचारी अपने दिल से हिन्दी को स्वीकार करें और उसका प्रयोग करना अपना कर्तव्य समझें।

श्री.जी.कण्णदासन, वरिष्ठ हिन्दी अनुवादक, कर्मचारी भविष्य निधि संगठन, कोयम्बत्तूर ने अगले सत्र का शुभारंभ करते हुये "हिन्दी पत्राचार" विषय पर विस्तार से चर्चा किया। उन्होंने कहा कि राजभाषा नियम के अनुसार पूरे देश को तीन क्षेत्रों में बाँटा गया है। 'क' 'ख' और 'ग' क्षेत्र। तमिलनाडु 'ग' क्षेत्र में आता है। इस क्षेत्र में स्थित केन्द्र सरकार के कार्यालयों को 55% हिन्दी में पत्राचार करना चाहिये। पत्राचार में आने वाले सभी प्रकार के पत्रों के संबंध में चर्चा करते हुए कार्यालय आदेश, अर्ध-कार्यालय आदेश, अधिसूचना, ज्ञापन, पावती आदि की जानकारी देते हुए कहा कि इन पत्रों को तैयार करते समय कुछ मानक शब्दों को द्विभाषिक रूप में प्रयोग करने से पत्राचार में दिये गये लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है।

यह कार्यशाला सभी को उपयोगी रहा। अंत में राजभाषा के नोडल अधिकारी डॉ.ए.सी.सूर्य प्रभा, वैज्ञानिक – सी ने सभी को धन्यवाद देते हुए इस कार्यशाला को सम्पन्न किया।

कार्यशाला के कुछ चित्र

हिन्दी कार्यशाला
HINDI WORKSHOP